nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अगस्त 2013 वर्ष 18, अंक 8

हमारे राष्ट्रीय चिह्न और प्रतीक

राष्ट्रीय चिह्न
अशोक स्तंभ
(26 जनवरी, 1950 को अपनाया गया)

राष्ट्रीय ध्वज
तिरंगा
(22 जुलाई, 1947 को अपनाया गया)

राष्ट्रगान
जन-गण-मन...
(रचयिता : रवींद्रनाथ टैगोर)

राष्ट्रगीत
वंदेमातरम्
(रचयिता : बंकिमचंद्र चटर्जी)

राष्ट्रीय पंचांग
शक संवत्
(57 ईसा पूर्व में आरंभ)

राष्ट्रीय पशु
बाघ (यह अपनी अपार शक्ति से जाना जाता है।)

राष्ट्रीय पुष्प
कमल
(पुराणों व धार्मिक ग्रंथों का पवित्र पुष्प)

राष्ट्रीय पक्षी
मोर (अपने रंगों की छटा व समृद्धि के लिए प्रसिद्ध)

राष्ट्रीय वृक्ष – बरगद (इसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली होती हैं।)

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का 56वाँ स्थापना दिवस समारोह

एनबीटी के नए प्रतीक चिह्न का अनावरण

माननीय मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू का उद्बोधन

1 अगस्त, 2013 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के 56वें स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, माननीय डॉ. एम.एम. पल्लम राजू ने वसंत कुंज, नई दिल्ली स्थित ट्रस्ट-मुख्यालय, नेहरू भवन में एनबीटी के नए 'लोगो' का अनावरण किया; साथ ही, ट्रस्ट-भवन में नवसृजित बाल पुस्तकालय (ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा संचालित) का भी उद्घाटन किया।

डॉ. पल्लम राजू ने अपने उद्घाटन-संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद द्वारा निर्मित ट्रस्ट का नया लोगो आज के बदल रहे परिवेश और पर्यावरण के अनुकूल है।

इससे पूर्व, एनबीटी के अध्यक्ष, श्री ए. सेतुमाधवन ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि एनबीटी का 56वाँ स्थापना दिवस मनाना हमारे लिए एक यादगार पल है। ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने इस अवसर पर उपस्थित मंत्री महोदय, अन्य गणमान्य व्यक्तियों तथा अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में उच्चतर शिक्षा विभाग की संयुक्त सचिव सुश्री वीना ईश की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर एक कथावाचन सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात बाल साहित्यकारद्वय श्री प्रकाश मनु एवं श्रीमती पारो आनंद ने स्कूली बच्चों को कहानियाँ सुनाईं और उनसे बातचीत की। श्री प्रकाश मनु ने कहा कि पुस्तकें हमारे लिए दुनिया का एक झरोखा खोलती हैं, हमें आनंद के साथ ज्ञान उपलब्ध कराती हैं और इसलिए पुस्तकों का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है।

हमें दुनिया की सरहदों से क्या मतलब
हमारा पैगाम मोहब्बत है, जहाँ तक पहुँचे। –सरदार जाफरी

मैं हमेशा सोचता हूँ कि स्वर्ग पुस्तकालय जैसा ही कुछ होता होगा। –जॉर्ज लुइस बोर्जेस

12 अगस्त : राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस

भारत में पुस्तकालय को जन-जन में लोकप्रिय बनाने एवं पुस्तकालय को एक आंदोलन के रूप में चलाने का श्रेय जिस महानुभाव को है वे हैं **श्री एस.आर. रंगनाथन** (पूरा नाम शियाली रामामृता रंगनाथन)। वे एक लेखक, अकादेमिक एवं गणितज्ञ थे। पुस्तकालय को एक विज्ञान और अभियान बनाने वाले इस महान व्यक्तित्व का पुस्तकालय क्षेत्र के प्रति शुरू-शुरू में कोई रुचि नहीं थी, किंतु समय और संयोग ने उन्हें भारत में पुस्तकालय विज्ञान का प्रणेता बना दिया। इस महान व्यक्तित्व का जन्म 12 अगस्त, 1892 को सिरकाझी, तमिलनाडु में हुआ था। पुस्तकालय विज्ञान का विशिष्ट अध्ययन उन्होंने लंदन में किया। कृतज्ञ राष्ट्र उनके जन्मदिन को **राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस** के रूप में मनाता है।

श्री रंगनाथन के संबंध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वे देश के प्रथम विश्वविद्यालीय पुस्तकालयाध्यक्ष थे। 1921 में मद्रास (अब चेन्नई) विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त श्री रंगनाथन वहीं 1924 में पुस्तकालयाध्यक्ष बने। भारत में पुस्तकालय विज्ञान, प्रलेखन तथा सूचना विज्ञान के जनक माने जाने वाले श्री रंगनाथन का इस क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान 'पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र' हैं। 1931 में उनके द्वारा निर्मित ये सूत्र हैं : 1. पुस्तकें उपयोग के लिए हैं। 2. हर पाठक उसकी पुस्तक (पुस्तकें सबके लिए हैं)। 3. हर पुस्तक उसका पाठक। 4. पाठक का समय बचाता है। तथा, 5. पुस्तकालय एक बढ़ता हुआ तंत्र (organism) है। वे विश्लेष- संश्लेषमूलक वर्गीकरण प्रणाली कोलोन वर्गीकरण के विकासकर्ता भी माने जाते हैं।

श्री रंगनाथन सन् 1945-47 तक बीएचयू में पुस्तकालयाध्यक्ष एवं प्रोफेसर, सन् '47 से '55 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में पुस्तकालय विज्ञान के मानद प्रोफेसर रहे। वे भारतीय पुस्तकालय संगठन के सन् 1944 से '53 तक अध्यक्ष रहे। सन् '57 में उन्हें सूचना एवं प्रलेखन के अंतरराष्ट्रीय परिषद का एक मानद सदस्य नियुक्त किया गया और इसी वर्ष उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। वे 1928 से 1945 तक मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन के सचिव रहे थे।

1955 व 1957 की अवधि में वे ज्यूरिख, स्विट्जरलैंड में रहे, जहाँ उन्होंने यूरोप के पुस्तकालय समुदाय के लोगों से अपना संपर्क बढ़ाया। इंडियन स्टैटिसटिकल इंस्टीट्यूट, बंगलोर में एक विभाग एवं शोध केंद्र के रूप में प्रलेखन शोध एवं प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना (1962) उनकी अंतिम महत्वपूर्ण उपलब्धि रही, जहाँ वे पाँच वर्षों तक मानद निदेशक रहे। 1965 में पुस्तकालय क्षेत्र में महत्तर योगदान हेतु उन्हें भारत सरकार द्वारा 'नेशनल रिसर्च प्रोफेसर' नियुक्त किया गया। रंगनाथन ने आत्मकथा भी लिखी थी, जिसका नाम था—ए लाइब्रेरियन लुक्स बैक। उनकी 62 पुस्तकें प्रकाशित हुईं; शोध लेख, सूचना लेख या टिप्पणियों की संख्या 2000 के आसपास थी।

भारत में पुस्तकालय विज्ञान के इस महान प्रहरी का बंगलोर में सन् 1972 में निधन हो गया। लेकिन पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में उनके किए कार्यों की वजह से ही आज देश के गाँव-गाँव में पुस्तकालय खुल गए हैं और ये लोगों को शिक्षित करने में महती भूमिका निभा रहे हैं।

2013 : अंतरराष्ट्रीय जल सहयोग वर्ष

जल जीवन है। यह एक महत्वपूर्ण पदार्थ है जो हमारे सौर मंडल के अन्य सभी ग्रहों से पृथ्वी को एक अलग स्थान दिलाता है। ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर जल की आरंभ में उत्पत्ति प्राचीन ज्वालामुखियों के उत्सर्जनों से द्रव तथा हिम दोनों रूपों में हुई, तथा यह पृथ्वी की सतह के करीब तीन-चौथाई को घेरे हुए है। पृथ्वी पर जल का तकरीबन 96.5% अंश दुनियाभर में फैले महासागरों में व्याप्त है; जबकि 1.7% अंश ध्रुवीय हिमखंडों, हिमनदियों और स्थायी हिम भंडारों के रूप में मौजूद है और करीब 1.7% भूमिगत जल, झीलों, झरनों एवं जमीन में है। और इसमें से केवल 0.08% ही मनुष्य को सीधे इस्तेमाल के लिए उपलब्ध है। इसीलिए जल हमारी सबसे मूल्यवान संपदा है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2013 को **अंतरराष्ट्रीय जल सहयोग वर्ष** घोषित किया है।

329 मिलियन हेक्टेअर तक विस्तृत हमारे देश की नदियाँ हमारी जीवन रेखा हैं तथा कृषि विकास, ग्रामीण समृद्धि एवं औद्योगिक प्रगति का स्रोत हैं।

शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।

खुदीराम बोस
पुण्यतिथि : 11 अग., 1908

एक पुस्तकालय ऐयाशी या विलास का साधन नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्यताओं में से एक है। –हेनरी वार्ड बीशर

9 अगस्त : विश्व के मूल (जनजातीय) निवासियों के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस

विश्व भर के मूल निवासी, जिन्हें हम आदिवासी या जनजातीय लोग भी कहते हैं, आज भी अधिकांशतः जंगलों में ही रहते हैं और कंद-मूल-फल या जंगली जीवों का भक्षण कर अपना जीवनयापन करते हैं। ऐसे ही मूल या जनजातीय लोगों की संरक्षा और उनके जीवन स्तर में सुधार के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र की आम सभा ने 23 दिसंबर, 1994 को वर्ष 1995 से प्रति वर्ष 9 अगस्त को जनजातीय लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाने का निर्णय लिया। सन् 1995 से 2004 को विश्व जनजातीय लोगों के अंतरराष्ट्रीय दशक के रूप में भी मनाने का निर्णय लिया गया। पुनः 2004 में, आम सभा ने वर्ष 2005 से 2014 को इसी विषय पर दूसरा अंतरराष्ट्रीय दशक घोषित किया। इस बार का थीम था–कार्य एवं प्रतिष्ठा के लिए दशक।

दरअसल, इस दिवस को मनाने का मकसद जनजातीय लोगों द्वारा वैश्विक मुद्दों, यथा–पर्यावरणीय संरक्षण आदि के क्षेत्र में उनके महती अवदान एवं उपलब्धियों को याद करना एवं उनका सम्मान करना है। इस दिन दुनिया भर के देश संयुक्त राष्ट्र के मकसद और संदेश को फैलाने हेतु अनेक गतिविधियाँ करते हैं। जनजातीय लोगों के साथ परस्पर समझदारी विकसित करना एवं उनकी हर तरह से सुरक्षा-संरक्षा संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों में हैं।

इस दिवस से संदर्भित 'लोगो' का रचनाकार बांग्लादेश का एक चकमा छात्र, रिबांग दीवान है।

जिनके जन्मदिन, 29 अगस्त को कृतज्ञ राष्ट्र 'खेल दिवस' के रूप में मनाता है

ध्यान चंद : भारतीय हॉकी के हीरा

दुनिया उन्हें हॉकी का जादूगर कहकर सम्मान करती है। वे ध्यान चंद हैं, जिन्होंने अपने पूरे खेल जीवन में एक हजार से अधिक गोल किए। भारत को उन्होंने तीन ओलंपिक, क्रमशः एम्सटर्डम (1928), लॉस एंजेलिस (1932) एवं बर्लिन (1936) में स्वर्ण पदक दिलाए।

भारतीय हॉकी के इस 'हीरा' का जन्म 29 अगस्त, 1905 को इलाहाबाद शहर में हुआ था। स्टिक और बॉल के साथ उनकी जुगलबंदी जबरदस्त थी और अपने स्टिक के साथ मैदान में वे बॉल को ऐसे चिपकाए दौड़ते थे, मानो स्टिक में कोई उम्दा गोंद लगा हो। आज भी ध्यान चंद की बराबरी करने वाला दुनिया में हॉकी का कोई भी खिलाड़ी नहीं है।

कहा जाता है कि सन् 1936 के बर्लिन ओलंपिक में जर्मनी की भारत के हाथों 8-1 से पराजय के बावजूद जर्मन-तानाशाह हिटलर ने उन्हें जर्मनी में कर्नल की नौकरी देने का प्रस्ताव किया था, पर उन्होंने विनम्रतापूर्वक उसे अस्वीकार कर दिया। सन् 1932 के लॉस एंजेलिस ओलंपिक में भारत ने ध्यान चंद की बदौलत मेजबान देश अमेरिका को 24-1 से पराजित किया था। सन् 1926-48 के बीच ध्यान चंद सारी दुनिया में खेले। ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1935 में खेले गए कुल 48 मैचों में ध्यान चंद के गोलों का रिकॉर्ड अविस्मरणीय रहा, यानी कुल 584 गोलों में से अकेले 201 गोल उनके थे। क्रिकेट के बादशाह सर डॉन ब्रैडमेन ने कहा था–'ध्यान चंद क्रिकेट के रनों की तरह गोल बनाते हैं।' सन् '47-'48 के दौर में उन्होंने खेल से संन्यास ले लिया। कृतज्ञ राष्ट्र ने उन्हें 'पद्मभूषण' का सम्मान दिया। 3 दिसंबर, 1979 को उनका देहावसान हो गया।

खेल के क्षेत्र में पहला भारत रत्न सम्मान अगले वर्ष ध्यान चंद को देने की चर्चा चल रही है।

जयंती : 3 अगस्त (1886)

मैथिलीशरण गुप्त

जयंती : 19 अगस्त (1907)

हजारी प्रसाद द्विवेदी

जयंती : 15 अगस्त (1872)

अरविंद घोष

पुण्यतिथि : 15 अगस्त (1886)

रामकृष्ण परमहंस

विश्व स्तनपान सप्ताह (अगस्त का प्रथम सप्ताह)

राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा (25 अगस्त से 8 सितंबर)

पुस्तकालयों के बिना हमारे पास क्या है? हमारा कोई अतीत नहीं और न भविष्य। –कैथी एल. वू

स्वाधीनता दिवस, रक्षाबंधन, हिरोशिमा दिवस एवं बरसात पर केंद्रित काव्य प्रस्तुति

स्वतंत्रता का गान

आओ गाएँ आज हम स्वतंत्रता का गान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें रोकने बाधाएँ अपना जोर लगाए
बरसाए गोलियाँ चाहे बारूद बिछाए
युग-युग गूँजे स्वर आजादी का
भरेंगे हम प्राणों में नव प्राण
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें दिशा-दिशा में अलख जगाना है
अब घर-घर नई किरण पहुँचाना है
हम सृजन वर्तिका के परवाने
हमारी आस्थाएँ अटल महान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

हमें प्रहरी धवल हिमालय की सौगंध
स्वदेश हित हुए शहीदों की सौगंध
सदा ज्वालाओं को गले लगाकर
वारेंगे माँ पर हँस-हँस प्राण
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

आज का दिन यह उत्कर्ष का संकेत है
आज का दिन यह चेतनता समवेत है
गीत कर्मरत गा रही मशीनें
पाया वैभव का गौरवमय वरदान
आज का दिन है नई ज्योति का अभियान

जगन्नाथ विश्व, नागदा, म.प्र.

तिरंगा भारत की शान

तिरंगा है भारत की शान
हजारों वीर हुए जिस पर कुरबान
गुणगान करें हिमगिरि औ' गंगा
और जन-गण-मन करते नित गान
तिरंगा है भारत की शान।

मस्ती से लहराता यह नभ में
स्वाभिमान बढ़ाता यह जग में
है यह जन-जन की आँखों का तारा
यह सदा चमकता नील गगन में।

परचम जन-गण-मन हरषाता
प्रतिष्ठा वीरों की बतलाता
भारत का मस्तक ऊँचा कर
महत्व आजादी का समझाता।

शहीदों के खूँ की यह पहचान
बनाता युवकों को यह बलवान
ध्वज के रंग बड़े प्यारे
केसरिया, श्वेत चक्रयुत, हरितान
तिरंगा है भारत की शान।

सुगनचंद्र जैन 'नलिन', गुना, म.प्र.

भा गई फिर राखी

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

खुशी लुटाने सब पर
आ गई फिर राखी
भाई-बहन को सारे
भा गई फिर राखी।

भाई की कलाई पर
सज गई फिर राखी
खुशियों से घर-आँगन
भर गई फिर राखी।

गाँव-शहर हर जगह
छा गई फिर राखी
उपहारों से झोली
भर गई फिर राखी।

सबका मुँह मीठा
कर गई फिर राखी
खुशहाली का तोहफा
दे गई फिर राखी।

गोरखपुर, उ.प्र.

एक पुस्तकालय को झरोखा की अवश्यकता नहीं होती। पुस्तकालय स्वयं एक झरोखा है।–स्टीवर्ट ब्रैंड

स्वाधीनता दिवस, रक्षाबंधन, हिरोशिमा दिवस एवं बरसात पर केंद्रित काव्य प्रस्तुति

नन्ही लड़की

दरवाजों पर मैं आपके
दस्तक दे रही हूँ
कितने ही द्वार खटखटाए हैं मैंने
किंतु देख सकता है कौन मुझे
मरे हुओं को कोई कैसे देख सकता है?

मैं मरी हिरोशिमा में
दस वर्ष पहले
मैं थी सात बरस की
आज भी हूँ सात बरस की
मरे हुए बच्चों की आयु नहीं बढ़ती।

पहले मेरे बाल झुलसे
फिर मेरी आँखें भस्मीभूत हुईं
राख की ढेरी बन गई मैं
हवा जिसे फूँक मार उड़ा देती है।

अपने लिए मेरी कोई कामना नहीं
मैं जो राख हो चुकी हूँ
जो मीठा तक नहीं खा सकती।

मैं आपके दरवाजों पर
दस्तक दे रही हूँ
मुझे आपके हस्ताक्षर लेने हैं
ओ मेरे चाचा! ताऊ!
ओ मेरी चाची! ताई!
ताकि फिर बच्चे इस तरह न जलें
ताकि फिर वे कुछ मीठा खा सकें।

मूल : नाज़िम हिकमत, **अनु.** : शिवरतन थानवी
(ई-पत्रिका *शब्दांकन* से साभार)

बरखा रानी

मीना गुप्ता, *आगरा, उ.प्र.*

बादल के रथ पर सवार हो
बरखा रानी आई
बिजली की चूनर लहराती
ढोल बजाती आई।
बूँदों की पायल छनकाती
छमछम करती आई
देखो बरखा रानी आई।
जलते तपते खेतों को
ढंडक पहुँचाने आई
सूखे ताल-तलैयों पर
रस बरसाने आई
ओ हो! बरखा रानी आई।
सागर से गागर भर-भर
जल छिड़काती आई
आकुल-व्याकुल धरती पर
अमरित बरसाती आई
आ हा! बरखा रानी आई।

जब मैंने अपना लाइब्रेरी कार्ड पाया, वस्तुतः तभी मेरे जीवन की शुरुआत हुई। –रीटा माए ब्राउन

पुस्तक का संसार बसा लो
उर में इनका प्यार बसा लो
एक बार पढ़कर तो देखो
मिलेगा सुख अपार बसा लो।
गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

फूल खिलेंगे हर पल हरदम
खुशबू वाला होगा मौसम
संस्कार और ज्ञान जहाँ पर
वहाँ कभी भी होगा ना गम।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

लड़ाई-झगड़ा छोड़ो
पढ़ाई से नाता जोड़ो
पढ़ने से मिलेगा ज्ञान
सारा जग करेगा सम्मान।
प्रकाश भानु महतो, बड़पाली, झारखंड

पुस्तकें पुस्तकें पुस्तकें
दूर करती अड़चनें
अज्ञानता दूर भगाती
जीवन को आगे बढ़ाती।
सुरेंद्र 'अंशुल', अम्बाला, हरियाणा

समुन्नत साहित्य ही भावी पीढ़ी के संपूर्ण विकास एवं राष्ट्र की उन्नति का सुदृढ़ आधार है।

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **जुलाई, 2013 :** 'मिसाल' के अंतर्गत 'एक ग्राम पंचायत ऐसा भी' प्रेरक व अनुकरणीय खबर है। बुलेटिन के चित्र/फोटो बेहद सुंदर व मोहक होते हैं। पत्रिका में बच्चों की बनाई पेंटिंग का प्रयोग करें तो अच्छा होगा। अंत में, उत्कृष्ट संपादन हेतु समस्त संपादकीय टीम को बधाई। **प्रेमकुमार गौतम,** झाँसी, उ.प्र.
(ट्रस्ट से बच्चों के लिए एक द्विभाषी मासिक पत्रिका 'पाठक मंच बुलेटिन' का भी प्रकाशन होता है। उसमें यदा-कदा बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग का उपयोग होता है। **–संपा.**)

☐ साक्षरता मिशन के बारे में जानकारी उपयोगी थी। छोटे-छोटे प्रासंगिक और समयोचित आलेख बेहद प्रभावशाली एवं उपयोगी होते हैं। ट्रस्ट से प्रकाशित प्रेमचंद की रचनाओं की जानकारी देता पुस्तक परिचय खंड प्रेमचंद को पढ़ने वाले पाठकों के लिए लाभप्रद होगा। अनोखीलाल कोठारी के कृत्य की जानकारी सार्वजनिक कर आपने ऐसे कृत्य करने वाले अन्य लेखकों को सचेत कर अच्छा काम किया है। अन्य रचनाकार की रचना को अपने नाम से छपवाना हर तरह से निंदनीय है।
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोलाबाजार, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ साढ़े सात पृष्ठों में इतना कुछ! कैसे संजो लेते हैं इतना सब? सामग्री इतनी पठनीय, इतनी रोचक और इतनी ज्ञानवर्धक–यह लघु पत्रिका सचमुच गागर में सागर को समाहित करती है।
कमलेश व्यास 'कमल', उज्जैन, म.प्र.

☐ साक्षरता मिशन कार्यक्रम का परिचय पाकर अच्छा लगा। कार्यक्रम का ईमानदारी से कार्यान्वयन अवश्य ही फलदायी होगा। लघुकथा अच्छी थी। पुरोधा कलमकारों, विभूतियों को याद करना जड़ों से जोड़े रखने का बेहतर उपक्रम है। कोठरी जी का व्यवहार अविश्वसनीय लगता है। एक दुखद समाचार : मेरी धर्मपत्नी श्रीमती श्यामा बिल्थरे का 27 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.
(साक्षरता संवाद का संपादकीय परिवार आपके इस दुख में शामिल है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे। **–संपा.**)

☐ जुलाई अंक गागर में सागर लगा। फोटो प्रासंगिक एवं खूबसूरत हैं। रचनाओं की विविधता प्रभावित करती है।
सुरेश आनंद, रतलाम, म.प्र.

☐ **सा. सं.** में स्तरीय, पठनीय, ज्ञानवर्धक तथा सूचनापरक सामग्री होती है। पत्रिका सभी के लिए उपयोगी है।
प्रो. महेश दुबे, सानपाड़ा, नवी मुंबई, महाराष्ट्र

☐ प्रति माह समसामयिक ऐतिहासिक विभूतियों को याद करके आप एक बड़ा काम कर रहे हैं। पुस्तकीय एवं ज्ञान की महत्ता को दर्शाती कविताएँ प्रेरक और संदेशपरक हैं। पठन-पाठन की ओर प्रवृत्त करने में पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड

☐ विगत 15 वर्षों से **सा. सं.** पढ़ रहा हूँ, पर पहले की तुलना में पत्रिका अब काफी निखर गई है। महापुरुषों, महान विभूतियों के संबंध में संक्षेप में पर उपयोगी जानकारी पत्रिका की खास विशेषता है। पत्रिका का रंगीन होना इसे और भी आकर्षक बना देता है। पत्रिका नवसाक्षरों, साक्षरताकर्मियों के अलावा बच्चे, बूढ़े, जवान और महिला–सभी के लिए समान रूप से उपादेय है। यह पत्रिका सभी को जोड़ती है और मार्गदर्शन करती है। इतनी सस्ती और आकर्षक पत्रिका! समस्त संपादकीय टीम को बधाई।
पी.एम. जोशी, इचमेरी मठ, बीजापुर, कर्नाटक

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

साक्षरता का दीप जलाएँ

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम, *भोपाल, म.प्र.*

चलो सब साक्षरता का दीप जलाएँ
जन-जन के जीवन में फैले अँधियारे को दूर भगाएँ।

चलो सिखाएँ अ आ इ ई
क ख ग की बोली
सुख-सविधाओं से भर देती
जो जीवन की झोली
पढ़ा-लिखाकर निरक्षरों को सुख की राह दिखाएँ।

चलो जहाँ मजदूर कामगर
या किसान रहते हैं
महाजनों-ठेकेदारों के
धोखे नित सहते हैं
उनकी बस्ती में जा-जाकर शाला रोज लगाएँ।

नहीं अशिक्षा से बढ़कर
अभिशाप और है दूजा
पढ़े-लिखों को सारी दुनिया
में है जाता पूजा
चलो सभी के जीवन से हम यह अभिशाप मिटाएँ।

आँख मूँदकर अब न किसी
कागज पर लगे अँगूठा
'हस्ताक्षर से लेंगे वेतन'
लो संकल्प अनूठा
स्वाभिमान का मूलमंत्र यह चलो उन्हें समझाएँ।

पढ़ना-लिखना अच्छी बात

महेश सक्सेना, *भोपाल, म.प्र.*

पढ़ना सीखो लिखना सीखो
पढ़ना-लिखना अच्छी बात
पढ़ने-लिखने वाले जीते
मृत्यु नहीं दे सकती मात।

आलस छोड़ो करो न कोई
अपने जीवन में उत्पात
पढ़ना-लिखना अच्छी बात।

पढ़ने-लिखने वाले होते
आसपास जग में विख्यात
कुछ भी नहीं असंभव उनको
संभव हो जाती हर बात।

पढ़ने-लिखने वालों की तो
होती सदा एक ही जात
पढ़ना-लिखना अच्छी बात।

पढ़ने-लिखने से ही होता
पूरा अधिकारों का ज्ञान
ऊँचे-ऊँचे पद पाने का
बनता मार्ग आसान।

इसीलिए संकल्प करो तुम
पढ़ने-लिखने का दिन-रात
पढ़ना-लिखना अच्छी बात।

चाचा 'चक्र' के साक्षरता पर सचगुल्ले

राकेश 'चक्र', *मुरादाबाद, उ.प्र.*

साक्षरता हमसे कहे, कर लें अक्षर ज्ञान
जग में तो ये ही सदा, देती है सम्मान
देती है सम्मान, पढ़ो 'काके' की नानी
पढ़ने की ना उम्र, कहें सब ज्ञानी-ध्यानी
कहे 'चक्र' कविराय, मिटाएँ निरक्षरता
मन को कर एकाग्र, बढ़ाएँ हम साक्षरता।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/8/2013

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं व्यक्तित्व पर ने.बु. ट्रस्ट से सतत शिक्षा पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकें

पढ़ने के फायदे

- यह आपकी जिज्ञासा को शांत करता है।
- यह आपको शक्तिशाली बनाता है।
- यह आपको सूचना और जानकारी से भरता है।
- इससे 'क्यों' और 'कैसे' का जवाब मिलता है।
- आपके स्वाभिमान का निर्माण करता है।
- पढ़ना मनोरंजक और आनंददायक है।
- इससे सारी दुनिया आपके आस-पास होती है।
- बैठे-बैठे सारी दुनिया की सैर कराता है।
- यह आपको सदैव आगे रखता है।
- यह आपको अधिक बुद्धिमान और तेजोमय बनाता है।
- यह आपके व्यक्तित्व में निखार लाता है।
- यह आपका मानसिक क्षितिज बढ़ाता है।

थीब्स के पुस्तकालय के दरवाजे पर खुदा हुआ है — आत्मा के लिए औषधि।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070